अरे! यह तो खेल है

– आयुषी शर्मा

पहली बार हमने बच्चों के साथ मिलकर एक कहानी बनाई और इस बार सर ने ही शुरुआत की। बच्चों के बीच में कहानी का पहला वाक्य रखा जिसको कहानी के रूप में बच्चों ने आगे बढ़ाया। सर बीच–बीच में बच्चों की मदद भी कर रहे थे इसी प्रकार बच्चों के साथ मिलकर हमने कहानी को पूरा किया।

वर्तमान समय में हम जिस कठिन दौर से गुजरे रहे हैं उसने हमारे समाज को विभिन्न तरीकों से प्रभावित किया है। इसने स्कूलों में भी सीखने–सीखने की प्रक्रिया को बाधित किया है। परंतु इस दौरान भी सरकारों ने विभिन्न गैर सरकारी समुदायों के साथ मिलकर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को जारी रखने प्रयास किया।

कोरोना काल में उपजी परिस्थितियों के कारण सब लोगों की तरह मैं भी बच्चों के साथ काम करने को लेकर आशान्वित नहीं थी, पर परिस्थितियों के सामान्य होने के साथ मैंने भी स्कूल का रुख किया। क्योंकि बच्चों के साथ प्रत्यक्ष रूप से काम करने का पहला अनुभव था। इसलिए मन में उत्साह के साथ–साथ कुछ सवाल भी थे।

मुझे जिस शिक्षक के साथ काम करना था उन के बारे में बहुत अच्छी प्रतिक्रियाएं नहीं मिली थीं। इसलिये मन में थोड़ी चिंता और दुविधा थी कि कैसे काम होगा।

पहली बार जब मैं बच्चों से मिली तो वे एक नीम के पेड़ के छाया में चारपाई बिछाकर बैठे हुए थे और यंत्रवत चुपचाप दक्षता उन्नयन की कॉपियां भरने में व्यस्त थे। शिक्षक पास में ही कुर्सी में बैठे थे जो आपस में एक–दूसरे से बात कर रहे थे। न बच्चे शिक्षक से कुछ पूछ रहे थे न शिक्षक बच्चों को कुछ बता रहे थे। मैंने और मेरी साथी नितिका ने शिक्षक को अपना परिचय दिया और अपने संस्था के बारे में बताया। शिक्षक ने कोरोना से संबंधित कुछ बातचीत की साथ ही उन्होंने बताया कि वो इस स्कूल किसी दूसरे स्कूल स्थानांतरित होकर आए हैं। बात–बात में उन्होंने बताया कि यहां के बच्चे बहुत कमजोर हैं। इन्हें पढ़ना–लिखना नहीं आता। ये बहुत शोर करते हैं और ना ही बच्चे मेरी कोई बात सुनते हैं। मैं चुपचाप शिक्षक की बात सुनती रही। अगले कुछ दिन ऐसा ही चला मैं बस मोहल्ला क्लास में जाती चुपचाप बच्चों और शिक्षक का अवलोकन करती। बच्चे आते एक–दूसरे की नकल कर कॉपियां भरते और घर चले जाते। शिक्षक न बच्चों से कोई गतिविधि कराते न कुछ समझाते। यह सब कुछ मेरे लिए सपनों के उड़ान से गिरकर हकीकत की जमीं पर गिरने के समान था क्योंकि बच्चे, शिक्षक और सीखने–सिखाने को लेकर मैंने बहुत सारे सपने देख रखे थे कि बच्चों को ये पढ़ाना है। ऐसे पढ़ाना है, यह गतिविधि करानी है। शिक्षक के साथ मिलकर ऐसे काम करना है पर यहां सब कुछ कितना अलग और उलट था।

कुछ दिनों तक ऐसे ही अवलोकन करने के पश्चात मैंने कुछ हस्तक्षेप करने का निर्णय किया। एक दिन जब शिक्षक मौजूद नहीं थे तो मैंने बच्चों के साथ कुछ गतिविधियां करवाने का निश्चय किया। इसलिए मैंने बच्चों से पूछा–क्या वे कोई खेल खेलना चाहते हैं? इस पर कुछ ही बच्चों ने हां में जवाब दिया। फिर मैंने पूछा– आप सब कौन सा खेल खेलना चाहते हैं इस बार बच्चों ने

अलग–अलग नाम बताये। अंत में यह निश्चय हुआ कि लंगड़ी खेला जाये। शुरुआत में इसमें कुछ ही बच्चे शामिल हुए लेकिन जैसे–जैसे खेल आगे बढ़ा सभी इसमें शामिल होकर खेलने लगे। जो प्रायः चुप रहते थे आज हंस रहे थे, खेल रहे थे, एक–दूसरे से बातें कर रहे थे, मस्ती कर रहे थे। आज अंत में मैंने कल फिर आने और खेल खिलाने के वायदे के साथ विदा ली। अगले दिन फिर हमने कुछ और खेल खिलाये, यह सिलसिला कुछ दिनों तक चलता रहा। सभी बच्चे जो चुपचाप कक्षा में बैठे रहते थे वे अब खेलने लगे थे, आपस में बात करने लगे थे। अपनी कुछ–कुछ बातें बताने भी लगे थे कि कैसे वे ढ़ोर चराने जाते हैं, घर में कौन–कौन लोग हैं, उनके माता–पिता मजदूरी करने कहां जाते हैं, गांव में क्या–क्या होता है, उनके पसंद नापसंद क्या–क्या है, एक दूसरे को कमियां बुराईयां आदि।

मैंने अब खेल–खेल में विभिन्न विषयों की अलग–अलग संकल्पनाओं को भी शामिल करना शुरू कर दिया, जैसे लंगड़ी के खेल में घेरे गिनना, 1 घर आगे 2 घर पीछे बताओ कितने घर, 3 घर मेरे 3 घर तुम्हारे बोलो कितने घर। खेल–खेल में घर में क्या हुआ, क्या खाया पर बात हो सकती है। एक दिन खेलने से पहले शर्त रखी कि आज हम पढ़ाई करेंगे फिर खेलेंगे उस दिन मैंने गतिविधियों के माध्यम गिनने पर कार्य किया। आज बच्चों ने बहुत खुश होकर गिनने का काम किया। रितेश ने अचानक कहा "मैडम आप तो पढ़ा नहीं रही हैं ये तो खेल खिला रही है", मैंने कहा यही तो पढ़ाई है इस पर सभी बच्चे आश्चर्यचकित होकर देखने लगे। गतिविधि आधारित कार्य अब रोज का सिलसिला बन गया था, अब तो आस–पास के नए बच्चे भी मोहल्ला क्लास में आने लगे थे, हम विभिन्न संकल्पनाओं पर कार्य करने लगे थे। हमने साथ मिलकर बहुत सारी गतिविधि आधारित कार्य किया जैसे गिनना, जोड़, घटाव, कविता लिखना, कहानी सुनाना। बच्चे अब मुझसे खूब प्रश्न पूछते थे मैडम यह क्या है, ऐसा कैसे होता है, ऐसा क्यों नहीं है, मैं अब खुद उत्तर ढूंढने को कहती, अंत में उत्तर देती।

पर इन सब चीजों के बीच मुझे एक बात लगातार निराश कर रही थी कि साथी शिक्षक इस पूरी प्रक्रिया में शामिल नहीं हो रहे थे। वे कई बार कुछ बच्चों को अलग लेकर बैठ जाते। कई बार बस फोन में व्यस्त रहते। कई बार वे काम का बहाना बना कर सारे बच्चों की जिम्मेदारियां मुझ पर छोड़कर चले जाते। इस दौरान मैं विभिन्न मुद्दों– बच्चों के सीखने–का तरीका, शारीरिक दंड का प्रभाव, बच्चों का सीखना कैसे बेहतर किया जा सकता है। जैसे प्रश्नों पर लगातार बात की। वे इन समस्याओं को जरूर सुनते इस पर बातचीत करते पर इनके समाधान के लिए कोई तरीका नहीं सुझाते न ही उस पर कोई काम करते। मैं उनसे कक्षा में किसी संकल्पना या प्रश्न को समझाने बताने के लिए भी आमंत्रित करती तो वे इनकार कर जाते। लगातार प्रयासों के बावजूद उनके साथ मिलकर काम करना कठिन हो रहा था।

साथ मिलकर काम करने के परिणाम कितने कारगर होते हैं इसका अनुभव मोहल्ला कक्षा के दौरान शिक्षकों के साथ काम करते हुए महसूस किया।

इन सबके बीच अब प्रतिभा पर्व भी शुरू हो चुका था (प्रतिभा पर्व मध्यप्रदेश सरकार की शिक्षा के क्षेत्र में चलायी गई योजना है जिसके अंतर्गत नियमित अंतराल पर बच्चों और स्कूल के विकास के प्रत्येक पहलू का समग्र आकलन किया जाता है) इसे लेकर मैं चिंतित थी कि बच्चे आखिर परीक्षा कैसे देंगे क्योंकि विभिन्न विषयों में बहुत थोड़ा ही काम हो पाया था और प्रतिभा पर्व को लेकर शिक्षक ने गतिविधियाँ को करवाने से मना भी कर दिया था।

जब प्रतिभा पर्व शुरू हुआ तो सोलंकी सर ने इसके अंतर्गत परीक्षा कराने में मुझसे सहायता करने का अनुरोध किया जिसे मैंने स्वीकार कर लिया। जैसे ही परीक्षा शुरू हुई पहले दिन शिक्षक खुद बच्चों को उत्तर बताने लगे और सभी बच्चों को प्रश्नों के उत्तर भी नकल कराने लगे, जिसमें कई प्रश्नों के उत्तर गलत भी थे। मैं बस चुपचाप पूरी प्रक्रिया का अवलोकन कर रही थी। अगले दिन यही प्रक्रिया चल ही रही तभी अचानक यश मेरे पास आया और एक प्रश्न का उत्तर पूछा मैंने उसे वह प्रश्न समझा दिया उसने खुश होकर कहा मुझे तो यह आता है और इस प्रकार समझाने पर उसने एक–एक कर सारे प्रश्नों के उत्तर दे दिए। यह देखकर सारे बच्चे मेरे पास आ गए और मैंने सभी बच्चों को प्रश्न समझाना शुरू कर दिया और बच्चे उत्तर भी देने लगे। इसे देखकर शिक्षक जो अब तक इस पूरी प्रक्रिया को बस चुपचाप देख रहे थे वो भी इस प्रक्रिया में शामिल हो गए और बच्चों को प्रश्न समझाने लगे और बच्चे भी प्रश्नों के उत्तर देने लगे। इस

प्रकार मैंने सर के साथ मिलकर सभी बच्चों की मद्द की। अगले दिन भी यही प्रक्रिया चली। इसी प्रकार पूरे प्रतिभा पर्व में हमने साथ मिलकर बच्चों से काम कराया। प्रतिभा पर्व की समाप्ति के बाद अब जब भी मैं किसी भी संकल्पना पर बच्चों से गतिविधि कराती वे भले ही उसमें शामिल नहीं होते पर वे बच्चों को शामिल होने के लिए प्रेरित करते। बच्चों की समस्याओं पर उनसे बातचीत करते, बच्चों से प्रश्न पूछते, अब उनका अनुपस्थित होना भी कम हो गया था और बच्चों के सीखने–सिखाने से संबंधित चिंतायें भी वो अब मुझसे साझा करने लगे थे। पर अब भी वो न गतिविधियों मे शामिल होते थे न कि कोई गतिविधि कराते थे पर मैंने अपना काम जारी रखा और काम ऐसे ही चलता रहा। मैं मोहल्ला कक्षा में बच्चों से अलग–अलग गतिविधि कराती, सर आते बच्चों को गतिविधि मे शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते पर खुद कभी गतिविधि में शामिल नहीं होते वह मात्र बैठकर अवलोकन करते।

एक दिन बहुत गर्मी थी इसलिए मैंने बच्चों से उस दिन मात्र चित्रकारी और लिखने–पढ़ने संबंधी काम कराया और किसी प्रकार की गतिविधि नहीं करायी। अंत में छुट्टी के वक्त सर भी घर जाने लिए गाड़ी स्टार्ट करने लगे। अचानक वो मुड़कर मेरे पास आए मुझसे बोले 'मैडम आपने आज कोई गतिविधि तो कराई ही नहीं? चलिए कुछ गतिविधि कराते हैं', इस पर मैंने उनसे पूछा– 'सर आप बताइये कि कौन सी गतिविधि करायी जाए?' सर ने जैसे पहले से ही सोचकर रखा था, पूछते ही बोले, 'मैडम जो आपने कुछ दिन पहले कहानी बनाने वाली गतिविधि करवाई थी, बच्चों को काफी पसंद आयी थी, वही करवाते हैं।' इसके बाद उस रोज मोहल्ला कक्षा में पहली बार हमने बच्चों के साथ मिलकर एक कहानी बनाई और इस बार सर ने ही शुरुआत की। बच्चों के बीच में कहानी का पहला वाक्य रखा जिसको कहानी के रूप में बच्चों ने आगे बढ़ाया। सर बीच–बीच में बच्चों की मदद भी कर रहे थे इसी प्रकार बच्चों के साथ मिलकर हमने कहानी को पूरा किया। निरंतर प्रयासों के बाद आज यह बदलाव देखने को मिला था, इसलिए मैं बहुत खुश थी। बाद के दिनों में मैंने सर के साथ मिलकर बहुत सारे विषयों पर काम किया। इसके बाद कोरोना की दूसरी लहर आने के कारण मोहल्ला क्लास बंद हो गए और मैं दोबारा वहां नहीं जा सकी,पर मुझे उम्मीद है सर जरूर इन बदलावों को जरूर आगे बढ़ा रहे होंगे।

(लेखिका अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन खरगोन, मध्यप्रदेश से जुड़ी हैं)

प्रवाह का आगामी अंक

लर्निंग लॉस को कम करने में बाल साहित्य की भूमिका

रचनाएँ आमंत्रित हैं-

कोरोना के समय में लर्निंग लॉस को कम करने में बाल साहित्य का उपयोग-

- शिक्षकों के अनुभव (1000 से 1500 शब्द)
- कोरोना के समय में शिक्षकों द्वारा लिखी गयी बाल कहानियां व कविताएं
- कोरोना के समय में बच्चों द्वारा लिखी गयी कविताएं, कहानियां व बनाये गये चित्र
- **श्रेष्ठ बाल कहानियां** (मौलिक कहानियां भी)
- **बाल कवितायें** (मौलिक कवितायें)
- **कोरोना के बाद स्कूल खुलने पर बाल साहित्य और स्कूल लाइब्रेरी**- शिक्षकों के अनुभव (1000 से 1500 शब्द)
- **दीवार पत्रिका**- प्रक्रिया व शिक्षकों के अनुभव (1000 से 1500 शब्द)
- **स्टोरी टेलिंग**- कहानी कहने के तरीके- शिक्षकों के अनुभव- (1000 से 1500 शब्द)

रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क करें-
pravah@azimpremjifoundation.org
/ pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org
Phone- 9456591379